

मन्त्राङ्कशतक ॥ माहिकायुक्ता ॥ गीत ॥ अकारजसंज्ञानयित्वतच्छब्दं भि
 रिषपादयज्जिगा महेजवा २ बुभ्रायनीपीता वाञ्छु किनाम चला
 ग्रंथिषनप्रतिनञ्जसा ॥ ५ ॥ उंगं दंयति क्मा ज महाकास के
 पालयागिनीगध २ मयसां स मत्तयकयिध यञ्जुति गृह्ण नुखा
 दन्तुयिर्वैतु ॥ ६ ॥ हावना ॥ वभ्रायनीपीता अकारजवीड संक
 रितपयागकृत् अजिगा महेयिजर्व नाग के म जटुक २ महा
 पद्मनागं विहाय ॥ आचारुन ॥ उं बुभ्रायनी वभ्रासा कञ्जवतज २ श्री

श्री कुरुट ॥ पूजा मन्त्र ॥ ॐ नमः स्वाहा ॥ वेला यंतु ॥ च (छा) गं ह
 यं हि हं क जैः स्रज यति दिग्द कि एष्ट सिंगाः वज्रं तर्जुनि कादरु अन
 तं प्रीत सु गो वा सु कि ॥ शुभ ॥ सफ रुना दघना उल धन च (छा) ग
 नामा म हा त शु को जो ड म ह कि को ग उ म ख पा चा दि भ जि त्रि पाः
 सि त ॥ शु को न धि न ध क प न ॥ ३ ॥ य व र्ग जा त त दि नित ध त द यि य
 न पा द य य च रु हे न वा २ न डाय नी ख गा न रु क ना ग म ग ह न स म न
 य नित न ल द ॥ ४ ॥ हा व ना ॥ उ रु य न डाय नी सी गा यं का न वि ड
 रु व न पी तं का ला हि क र्ण च रु हे न वा न क ॥ ५ ॥ ता ग रु क र्ण ख पा न

ग

नागनाकापीनविहारा॥ जवाहन॥ उं नृजायती नृड प्राक ज्वनन २ गीर्षु
 रुं रुट्वाहा॥ यसा यंकुन॥ यशो म क॥ उं रुं रुट्वाहा ह ग्वा नी यन म
 लाहा॥ लुगुनिमांस ध्वययुलि॥ शुक्ति॥ यक (अ निविर्षु स्त्रिणा
 अ हयद १ पीता ग दा सं यूता ज क न क क उ लु जे घू न घू डिं च कु
 न थम प्रिर्हित १॥ श्री वा वि ड म द क न ज म र्ख १ श्री न त्वे सो ग क
 या नित्य य वर्ध यना सग क न महा हि मं सम ग्म न म रुन॥ २॥ य ॥
 न व र्ज जा न विहा न व नू (ह ज्ज्य क या द य नू न क हे न वा २ रुं डायनी
 रुं रु मा क क क ना ग हा ला दू ला नादि न ऊ ज दा॥ ५२॥ यवना॥ य

२
५

मिषं दुयनीयं कुमाहा न का नदीर्गं हिंसां तादाकृत्वा कृत्वा नृध ५
कृत्वा नृधे न वंपीतं विहाय ॥ अवाहन ॥ ॐ नृदुयनी स न सा क ज्वन न २ ५
धुं कं रुट्वाहा ॥ पूजा मनु ॥ ॐ रु रुट् ॐ दुयनी य स्थि न मे ४ स्थाहा ॥ यं सा
चं कृत्वा ॥ रुट् नि मि न धूय कृत्वा ॥ कुनि ॥ ५ कृत्वा जि कृत्वा न ना २ रुय क
न ४ स था नृपा सा निनाः वधि कु व न न क था रु धि य नि स्था मा हि क क
टक था ला ग कृत्वा नि वा लि द स म दि ना ता सा कृत्वा य मि म सा ह्य क ना न
नायि मृ प्र न का सृष्टा कि नि रं गु तं ॥ १ ॥ द ॥ च वर्ग जा न य वं न स न च न क
या द यं क पि स रे न वा २ वा ना हि न का य न रु र्ग ग क नं क स न वे ह

२

५

२

ककुलदा॥ ७॥ शिवना॥ दकि (सवाजा ही) प्रकाश का जटुई यमा दृष्ट प्रका
यक ४ कपिनः सववा पिंगल २ चून कक्षकाः नागकुलिकः नीलं लावयत
आवाहय॥ ३॥ वागाहि जुवलीकः अवनर २ श्रीधरं रत्न स्थाता॥ पञ्चमकु॥
उं ३० रुद्रवागाहिय नमः स्थाता॥ पंजायः रुमि॥ रुद्रगुमिः यचपनापधूप
अगुत्रा रुमि॥ याम्यां कर्षू यमा विधिः कथितं दं विपागं सदा आना
धामाहि यन नो रिधवलं यथा दिदिक्काधि पंश्चक र्हासंकः सवर्ल नकः प्र
गिदिनं चूनक वकीः महानु कालं ४ कल ललाद कर्ल वदनी वकी कल
कनथा॥ ४॥ ॥ अ॥ कवर्गज्ञानः एक प्रकाशः कल जपादपं क्रोध
रुद्रवा शकीमा बीनकाः महापना अ रुद्रहा सप्र ययजलदा॥ ७॥

ॐ (सुयां कोमा नीनका ककाल विरुं वनिनकं ॐ उटहासं रुं क्रोधरु नव हनिन
कलं रुं रुं ठपस नागं धवनं वनि अरु म लु लं ला वरी नु ॥ आवाहन ॥ उं कोमा नी
की लोकं अवतल रू श्री प्रहं रु ट्वाहा ॥ पूजा म रु ॥ उं रुं रुं रुं कोमा नी ये नम
स्वाहा ॥ पं लां घं रु नि ॥ धूप प रु न क थ ॥ रु गु नि रु रु धूप न किं ॥ उ
नि ॥ ॐ (सुयां दह शठ कम लु नु धवनो म द्वा रु मा ला विनी न क रु ग्र मो म
धालव धनी नाग महा पकठ धो नी वा नि धवनं रु की रुं रुं रुं वा हा सो ट्वाहा
महा न न को लानि कल रु ला लि व स वा उटहा स पि थ ॥ ॐ ॥ ने ॥ ट व र्ग जा
न मा रुं रुं रुं दि नि रु प्र को टि पा द पं उ न रु रु न वा रु वि रुं वी त्या मा अ न
रु नाग ल नि व श रु नाग न पू न रु रु ल हा ॥ ॐ ॥ न रु ल वि रुं वी त्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वायुर्वैष्णवसूक्तं नमो यका नवी ज ४ दवी काटकं ५ ४ संस्तु त
 हे नवा नका वायुश्चाम ४ उ इत्यनवृत्तः वागु कि नागम (गे नवरा वयं न ॥
 ओ वास्तु ॥ उं यं चा मूढा नून सो के अवेतन २ ग्रीष्मं रुट स्वाहा ॥ पूजा मक ॥
 उं रु रुट वा म (स्तु नम ४ स्वाहा ॥ यजो धे मुत ॥ रुगु तिसि नू जा ऊ न ॥ धू व
 क ग हा ॥ मु ति ॥ वा ना वा ति सु वा न क र्पे न धन १ गु र क न ज स न वा य व्वा दू
 त्रिका महा न ग य ति १ अ ज म हा क र्पे न ॥ म द्या न ह्य म व र्क को इ थ रु जि नाः
 धा ना न ग म ह्या म हा त ह न ति क ना र्क नू क्म ग ना धा ना ध का न व र्क न ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ग व र्ग जा न ज न (स नू ग म न व ट पा द प री व न हे न वा २ म हा ले
 कि ल्प ता भं व पा न ना गः कि लि २ सा वा व र्ष म ऊ न दा ॥ रा व ना ॥ नू ज म न

महालक्ष्मि गिता भक्तानदीर्घं हितं नरे नवायिं गजवर्षं यत्री तु कृतः वनवृक
महं भः अतः ४ कक कना (गम) जोत्रवं सव वा न यज यत ॥ ज्ञावा दना ॥ ३ ॥
महालक्ष्मि गूत्रलाक जवत न र शिर्षं रुं रुट ह्या हा ॥ पूजा म कृ ॥ ३ ॥ रुट न
हालक्ष्मि यमम १ हा हा ॥ यं ला दी सत ॥ त गृणि सिया रुकिः धूप क मृदू ग हा
ज डि ह ति था ॥ कृति ॥ ३ ॥ स ध स न कु ग्य वा दृष गत अलं क पा ज व रुत ग
जा ग रु न न महा म नि ध न १ श्री गं स्व पा न स थ ॥ गृ मृ य क म रु धि का र
स्व मृ र्वा १ शुक्रा व ना १ व स्थि ना १ य मृ य मृ य न न ना क ति ग लि ख ल कि
वन य त्व न ॥ ४ ॥ हे न व का लि पा द रु न ता द्वा द भ न य नं जालि ट य न र १ व द
नै न यि क न रु न र्ध न मा रु न व रु व रु य रु न र्ध ॥ श्रु क ॥ ३ ॥ का य कि

हा की दृष्टि नगरी विष्णु सदा यादि श्री ना गमगुल यक म ^ह सदा याः लकृति
कृति स्वयं ॥ तत्संविर्ति यथु सदा सदि न ४ श्री मात सदा मदि य ४ सा सा क
सि स मा यि वरु स दय स सैन म ४ सर्व थ ॥ **वेद वनः ना यू वरु दी**
ऊ ल्य ग म कृत ल्यः सदा वा ऊ स न न ॥ **वृद्ध वन म हा का ध्र म म य का ये न ऊ म**
न न य न स न सा प र्ण श्री र्ण म कुं स र्ण ल्य ना ॥ **आ क ॥ अ क ॥** किं सा हा व न न ना
थं जग क्कानि न वा ति क कि क सा मि का क क्कानि श्री प्रे सा हा च द हि म ॥
म ग ॥ अ क ॥ **वृद्ध वन म हा का ट द म य लु द ल्य दि सः** आ र्ण ना सर्व सा ला
नी क य श्री र्ण ल्य या क न ॥ **म न क्कानि ॥** **वृद्ध वन म हा का ट द म य लु द ल्य दि सः**
मि स ना थ क्रिया यि प्र स र्ण य दि र ग क्कानि ल्य व न ॥ **द हि नि र्ण ॥**

ॐ प्रकमुचिक कवज यद महाका धर्तु १ सर्व इह सा ज्ञान रुं रुट ॥ ॐ सु कृति २
रुं रुं रुट ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
ह सखि ना ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
न सखि ना ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
॥ २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
मि ॥ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
(सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
न सखि ना ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥
न सखि ना ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥ ॐ सु कृति २ ॥

पवा यहु स र्धं २ व ऊ पा स व न्ध न घा न त क न र्नी ॥ १ ॥ ॐ र्प य मु चि क व ऊ प
द व ऊ म हा का ध हं ऊ २ स र्व इ क्षा न सु सा न रु रु ट ॥ १४ ध रु त्या दि ॥ ॐ
आ प य २ रु रु ट ॥ वा य य ॥ ॥ सु मि न म ना म स व ऊ न त ल्हा न २ रु म प्र क ति
वै रु ऊ रु न हि ठ वी ॥ १५ ॥ उ रु ल ॥ य क ग न या जा ग रु लं का यू जि २ ना थ ह १०
नू व आ हा व रु न क न र्नी ॥ ॥ ॐ वि ग्य सु चि क व ऊ य द म हा का रु रु रु २
स र्व इ क्षा न सु सा न रु रु ट ॥ १४ ध रु त्या दि ॥ ॐ आ न य हा रु ग व न वि षा
जा ऊ रु रु ट ॥ १६ ॥ ॐ ॥ १ ॥ ओ ड ग (१) ध न न य वि ष रु न अ कि २ ना थ ना
हा ना य रु न जि व रु यू यी ॥ ८ ॥ म ध्या ॥ ऊ रु उ रु रु व न ना थ व प्र व म

७ पादपञ्चाशद्विंशति
यात्रायां
अ

चिह्नाश्च भूषाः वक्ष्यन्ति हस्मिन्निव कर्तव्यं ॥ ॥ यश्चिन्मन्त्रकः ॥ ॐ शुभमाली
जातवज्रपदवज्रमहाकोट ॥ १२ सर्वनिर्धिका न ईरुट ॥ १॥ वृद्धवज्र
नाम मन्त्रं कोट वा जा द गदिगस्मिन्नामा नष्टा गते क नामि ॥ १० ॥ उर्वर्ष्व ॥
वाचुलियत्रमन्त्रजगत्तन्त्रिया १ गम जति कूजि गम श्री गीत यत्रिगा ॥
॥ ॐ श्री ४ वृद्ध वज्रपदवज्रमहाकोट श्री कपय १ सर्वमा जान ईरुट ॥
॥ कु ॥ जके जा म्य ह त्रया हा क द र्ग र्य तु द (गम दि ॥ ॥ द ग कोट द
गदि (गम की त्रय सयना थ ह ॥ ॥ वृद्ध यत्रमन्त्र द्या य ॥ चतुर्विंश
य ॥ गम कृत स्या सन ॥ चतुर्विंश महा विन मम ॥ ॥ म्हा क ॥ अ क ॥ कि
मा हा ॥ मूत्र ग्य कु ॥ चतुर्विंश महा विन दान पति संयन्व श्री जा ॥

गुह्य न सा काम मा क दि स पा फं श्री च सि हि ह व तु य द हि म ॥ मू न द्वा र्द ॥
 य ॥ द क्षा य ॥ गी त ॥ य ज्ञा जि न रु का न ॥ वि हा य ॥ स क न ज ॥ मू न म्मा क
 कि न म्मा क स र्पि स र्पि य ड उ ल ॥ ॥ कि न म्मा क य ॥ जा ग र न वि ॥ उ र
 क उ ध क व ड रु का त्त का सि ना वि नि पू जा य यि या जे २ रु ल यि ज न
 क न म हा का र ज र्पि य वि द्म स मू ह न ॥ ॥ य य द्वा र्द य २ स र्पि ड द्वा र
 कि न य र्पि रु ट पा य रु जे २ उं व ड की न य व ड ध न श हा का य वा क यि
 ह कि न य नि ॥ ॥ श्री व ड स त्व ना ना धि या जे २ नू ह ज सि हि य द मा
 रु ज द ॥ ॥ पूर्व दि ग द्वा र का का न न जे २ रि ना ज न इ ति द्वा न नू पा २ च
 (कु ग री व श म हा म्मा ना जे २ द वा धि य नि ग द की न य नि ॥ ५ ॥ वू